Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 2 – 2025 Impact Factor: 7.665

UGC CARE I

प्रेम

डॉ० अमित जैन

असिस्टेंट प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग दिगम्बर जैन कॉलिज, बड़ौत बागपत, उत्तर प्रदेश

उदास एवं अशांत हृदय जिस शब्द के उच्चारण से मुदित हो उठे, वह शब्द है- प्रेम। मनुष्य अपनी उत्पत्ति से ही हृदयवान है, हृदय अपनी उत्पत्ति से ही भाववान है। भावों की उत्पत्ति से ही जो उनमें प्रधान है, वह है प्रेम। प्रेम की पारलौकिकता को स्वीकार करते हुए भक्तिसूत्र में कहा गया है कि

अनिर्वचनीय प्रेम स्वरूपम्।[1]

(प्रेम का स्वरूप वाणी में नहीं बंधता)

प्रेम की इस गहनता को अनुभूत करने वाले हृदय सामान्य नहीं होते। आधुनिक काल में प्रेम को वासना का प्रतीक माना जाने लगा है। प्रेम के नाम पर अनेक प्रकार के वितंडावाद दिखाई देने लगे हैं। एकतरफा प्रेम में विफल कथित प्रेमी का अपनी प्रेमिका पर तेजाब डालना, असफल प्रेम में प्रेमिका का फाँसी लगा लेना आज एक आम बात है। इसके आधार पर प्यार की विभिन्न व्याख्याएँ भी की जाती है। जैसे-

प्यार का पहला शब्द ही अधूरा है।

वो भाव जिसका प्रारम्भ ही अधूरेपन से होता है मनुष्य को पूर्णता कैसे प्राप्त करा सकता है? इतोपि Love is blind and lovers cannot see the pretty fallies that they themselves commit.[2]

(प्रेम अंधा है और प्रेमी उन सुन्दर मूर्खताओं को, जिन्हें वे करते हैं, नहीं देख सकते।)

ऐसा भाव जो मनुष्य की विवेक शक्ति का क्षरण कर उसे पतन की ओर उन्मुख कर दें, क्या ग्रहणीय है? जो बुद्धिशील प्राणी को मूर्खताओं के लिए प्रेरित करें क्या स्वीकार्य है? जिस भाव के कारण व्यक्ति मरने या मारने के लिए तत्पर हो जाए उसकी यह परिभाषा कदाचित उचित ही है।

L-Lake of Sorrow

O-Ocean of Tears

V-Valley of Death

E-End of Life

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 2 – 2025

UGC CARE I

विचारणीय तथ्य यह है कि जीवन को समाप्ति तक ले जाने वाला यह प्रेम क्या वास्तव में इतना निकृष्ट भाव है अथवा वासना से ग्रस्त हृदयों ने अपनी वासना पर प्रेम का परदा टांग प्रेम को क्षुद्र सिद्ध करने का प्रयास किया है और कर रहे हैं। किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले हमें सृष्टि के कुछ महत्त्वपूर्ण एवं सर्वमान्य विद्वानों के विचारों पर दृष्टिपान करना अनिवार्य है। इस क्रम में आधुनिक हिन्दी काव्य के प्रणेता 'अज्ञेय' के विचार महत्त्वपूर्ण हैं-

वे रोगी होंगे प्रेम जिन्हें अनुभव रस का कटु प्याला है।
वे मुर्दे होंगे प्रेम जिन्हें सम्मोहनकारी हाला है।।
मैंने विदग्ध हो जान लिया, अन्तिम रहस्य पहचान लिया।
मैंने आहुति बन कर देखा, यह प्रेम यज्ञ की ज्वाला है।।[3]

जिन लोगों ने प्रेम को पतन का प्रारम्भ कहा है अज्ञेय उनके लिए स्पष्ट शब्दों में गर्जना करते हैं कि उन लोगों की मनोदशा विकृत है, वे मनोरोगी एवं भाव शून्य मुर्दे के समान है। अज्ञेय स्वयं स्वीकार करते हैं कि उन्होंने किसी के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष नहीं दिया है। अपितु उन्होंने स्वयं अपनी अनुभूति से यह पाया है कि प्रेम यज्ञ की ज्वाला जितना पवित्र है। बशर्ते आप अपना सर्वस्व इसमें होम करने को तत्पर हो। प्रेम मार्ग पर सर्वस्व समर्पण के महत्त्व को अभिवयक्त करते हुए रामनरेश त्रिपाठी जी कहते हैं-

सच्चा प्रेम वही है जिसकी, तृप्ति आत्मबलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है, करो प्रेम पर प्राण निछावर ।।[4]

हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य कवि रामनरेश त्रिपाठी जी उसी को प्रेम स्वीकार करते हैं जहाँ पर व्यक्ति में 'अहम्' का भाव तिरोहित हो जाए। जिसके लिए व्यक्ति अपने प्राणों को भी होम करने के लिए तत्पर हो। यहाँ पर प्राणों के होम का अभिप्राय हत्या या आत्महत्या कदापि नहीं है। प्राणों का होम अर्थात् 'मैं' पने का अभाव, ममकार भाव का अभाव। जब मैं और तुम, स्व और पर का भेद समाप्त हो जाता है तभी प्रेम की निष्पत्ति होती है। सर्वकालिक कवि महात्मा कबीर भी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए स्वयं कहते हैं-

प्रेम गली अति साँकरी, यामे दो ना समाहि।[5]

यही भाव कबीर भगवान की प्राप्ति के लिए भी अनिवार्य मानते हैं-

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 2 – 2025

UGC CARE I

जब मैं था तब हरि नहीं,

अब हरि है मैं नाही।

वास्तव में प्रेम ईश्वरत्व का भाव ही तो है। मनुष्य का ईश्वर से सहज रूप से जो साक्षात्कार करा दे वह प्रेम है।

प्रेम स्वर्ग है, स्वर्ग प्रेम है, प्रेम अशंक - आलोक ॥

ईश्वर का प्रतिबिम्ब प्रेम है, प्रेम हृदय अशोक - आलोक ॥[6]

आचार्य त्रिपाठी जी प्रेमी हृदय में ही स्वर्ग स्वीकार करते हैं जैसे स्वर्ग में देव सदैव सुख का ही भोग करते हैं, उसी प्रकार प्रेमी हृदय भी सदैव आनन्द में डूबा रहता है। अपने प्रेम से इतर उसे अवकाश कहाँ। प्रेमी हृदय की विशेषताओं का भी त्रिपाठी जी ने यहाँ पर वर्णन किया है। प्रेमी हृदय शंका से रहित होता है, शोक से रहित होता है। उसका हृदय अपने प्रेम की आसक्ति से सदैव आलोकित रहता है। अन्य के लिए उसे अवकाश कहाँ। हृदय को सुचिता की चरम सीमा पर पहुँचाने वाला होने के कारण ही प्रेम को मठ-मन्दिरों से भी श्रेष्ठ स्वीकार किया गया है।

मठ मन्दिर मन से छोटे हैं।

स्नेह सही है, सब खोटे हैं।।

प्रेम हृदय की पवित्रता का प्रतीक है। प्रेम पशु से परमात्मा बनाने का मार्ग है। प्रेम विनाश का नहीं सृजन का कारण है। प्रेम से ही हम उत्पन्न होते हैं और प्रेम में ही हम विलीन हो जाते हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता रविंद्रनाथ टैगोर के शब्दों में -

"प्रेम से ही सृष्टि का जन्म होता है, प्रेम से ही उसकी व्यवस्था होती है और अन्त में प्रेम में ही वह विलीन हो जाती है।"[7]

टैगोर के अनुसार प्रेम ही वह एक मात्र भाव है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों की शक्ति व्याप्त है। प्रेमी हृदय में प्रेम के प्रति रति का जन्म होता है, रति का पल्लवन होकर उसका प्रेम रूप पालन होता है एवं द्वैतपने का अंत हो जाता है। महान उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा के विचार भी इसी भाव को अभिव्यक्त करते हैं।

प्रेम में आत्म बलिदान होता है।[8]

प्रेम बलिदान है। प्रश्न यह है कि किसका बलिदान? एकतरफा प्यार में इंकार करने वाले को बलिदान कर देना। चेहरे पर एसिड फेंककर ताउम्र क्षण-क्षण बलि होने के लिए बाध्य कर देना। मना

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 2 – 2025
UGC CARE I

करने पर सबक सिखाने की इच्छा से दोस्तों के साथ सामुहिक बलात्कार कर जीवित लाश होने के लिए छोड देना। मना करने पर अपने पुरुष मित्र पर बलात्कार का झूठा आरोप लगा उसे आत्महंता होने के लिए बाध्य कर देना। नहीं, नहीं .....कदापि नहीं।

शायद इसीलिए आज इस पवित्र शब्द को व्याख्यायित करने की आवश्यकता पड़ी। आज के तथाकथित प्रेमी वासना व प्रेम के महान अन्तर को समझकर आत्मसात करें। इस शाश्वत, सर्वोच्च भाव की सुचिता बनाये रखने के लिए यह अब अनिवार्य हो गया है।

अति सुधों स्नेह को मारग है, जहां नैकु सयापन बांक नहीं।
तहां साँचे चलें तजि आपनपौ, झझकें कपटी जे निसाँक नहीं।।
घनआनंद प्यारे सुजान सुनौ, यहाँ एक ते दूसरों आँक नहीं।[9]

प्रेम की पीर के अमर गायक घनानन्द के बिना प्रेम पर चर्चा सर्वथा अधूरी ही रहेगी। प्रेम का स्वरूप ज्ञात करने के लिए घनानन्द के काव्य का अनुशीलन परमावश्यक है। एक सच्चे प्रेमी का स्वरूप वर्णित करते हुए घनानन्द कहते हैं कि प्रेम के सीधे व सरल मार्ग पर एक सरल हृदय व्यक्ति ही चल सकता है। जिनके हृदय प्राप्ति की शंका से युक्त हैं वे इस पर कदापि ना चले। एक सच्चे हृदय वाला व्यक्ति आत्म समर्पण के साथ ही इस प्रेम पथ का पथिक होने की योग्यता रखता है।

घनानंद के अनुसार जो व्यक्ति अपने आपको भूल नहीं सकता, वह प्रेम मार्ग पर भी नहीं चल सकता। अपने आपको याद रखने वाला व्यक्ति रास्ते में ही थककर बैठ जाता है।

जान घनआनन्द अनोखो यह प्रेम पंथ,
भूले ते चलत रहैं सुधि के थकित है।[10]

घनानन्द प्रेम में वासना को कदापि स्वीकार नहीं करते। वासना से रहित होकर ही प्रेम परिपक्वता को प्राप्त होता है। शुद्ध प्रेम की इस सीमा को छूने के लिए सबकुछ विस्मृत कर प्रेममय होना पडता है। प्रेमी के हृदय में प्रेम की जागृति होने पर ज्ञान और भोग की सभी रेखाएँ क्षीण हो जाती हैं।

ज्ञान हूं ते आगे जाकी पदवी परम ऊंची,
रस उपजावै तामें भींगी भोग जात हैव ।।[11]

सैकड़ों वर्षों की कठिन ज्ञान साधना से हृदय की जो पवित्र अवस्था प्राप्त होती है, एक सच्चा प्रेमी अपने प्रेम के प्रति समर्पण एवं एक निष्ठता से उस पवित्र अवस्था को सहज ही प्राप्त हो जाता है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 2 – 2025
UGC CARE I

उसे कठिन बाह्य साधनों की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ती। भक्तिकाल के प्रकाण्ड पण्डित महात्मा कबीर इसी भाव को इन शब्दों में अभिव्यक्त करते हैं-

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।।[12]

दर्शन की दृष्टि से बात करें तो प्रेम द्वैत को अद्वैत बना देता है। भारतीय संस्कृति में अर्द्धनारिश्वर की परिकल्पना प्रेम की पराकाष्ठा का ही परिणाम है। जिन दो हृदयों में परस्पर प्रेम की जागृति होती है, उनका बाह्य संसार से सम्बंध विच्छेदित हो जाता है। वे पहले एक-दूसरे में एक-दूसरे को देखते हैं। फिर स्वयं में ही एक दूसरे को देखने लगते हैं। यही है दो जिस्म एक जान। बाबा तुलसी भी इस तथ्य को स्वीकारते हुए भारतीय संस्कृति के उपजीव्य ग्रंथ रामचरितमानस में लिखते हैं-

जल पय सरिस विकाई, देखहु प्रीति की रीति भलि। 13

प्रेम आत्म समर्पण है, प्रेम आत्मबलिदान है, प्रेम अहंकार का विसर्जन है, प्रेम ममकार का परित्याग है। प्रेम में देना ही देना है। प्राप्ति की इच्छा से किया गया प्रेम, प्रेम नहीं व्यापार है। हम अपनी क्षुद्र वासनाओं से प्रेम को बदनाम ना करें। जिन्हें प्राप्ति की कामना हो, जिन्हें अदला-बदली का व्यापार करना हो, जिन्हें देकर लेने की वांछा हो वे इसे प्रेम की संज्ञा कदापि न दें।

आधुनिक पीढ़ी कहती है कि समय के साथ साथ सब कुछ परिवर्तनीय होता है। तर्क एक दम संगत है। परंतु मित्र हम ये क्यों भूल जाते हैं कि संसार में कुछ चीजें 'शाश्वत सत्य' भी होती हैं। जो न कभी बदले हैं और न कभी बदलेंगे। यही कारण है कि प्राच्य साहित्यकारों एवं विद्वानों के विचारों से साम्य रखते हुए आधुनिक विद्वानों एवं साहित्यकारों ने प्रेम के स्वरूप को उसी प्रकार व्याख्यायित किया है जैसा प्राच्य विद्वानों ने। गोपाल दास नीरज जी प्रेम के विषय में लिखते हैं-

यही प्रेम की रीति कि सब कुछ देता, किंतु न कुछ लेता।[14]

प्रेम देने का नाम है, प्रेम में लेना नहीं होता। आज प्रेम के नाम पर साम्प्रदायिकता की, राजनीति की, धार्मिक उन्माद की रोटियाँ सेकने वालों को, लव जेहाद के नाम पर अपनी वासना की पूर्ति करके भोली-भाली बालाओं को नारकीय जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य करने वालों को, प्रेम के नाम पर छल-प्रपंच कर अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करने वालों को महान शायर गालिब की ये बात अपने जहन में गहराई से उतारने की आवश्यकता है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 2 – 2025
UGC CARE I

ताउम्र बस एक यही, सबक याद रखिये।

इश्क और इबादत में, नियत साफ रखिए।।[15]

आधुनिक काल के सर्वाधिक बौद्धिक व्यक्तियों में से एक, महान दार्शनिक एवं प्रगाढ तर्क शक्ति के धनी चंद्र मोहन जैन अर्थात आचार्य रजनीश अर्थात् 'ओशो' के बिना यह परिचर्चा अधूरी ही रहेगी। प्रेम पर चर्चा हो एवं ओशो के विचारों को अवकाश न मिले तो वह लेखन बिना नमक की रोटी के समान बेस्वाद ही रहेगा।

ओशो ने प्रेम तत्त्व का गहराई से चिंतन किया है। ओशो विचारों के समुद्र में तैराकी नहीं करते अपितु डुबकी लगाकर सच्चा मोती पाने वाले दार्शनिक हैं। ओशो ने प्रेम के विषय में स्पष्ट अभिव्यक्ति दी है-

सच्चा प्यार खुशी बांटने जैसा ही है, ये बदले में कुछ नहीं मांगता और न ही किसी चीज की उम्मीद करता है।[16]

प्रेम सरल है, प्रेम निशंक है, प्रेम त्याग है, प्रेम समर्पण है, प्रेम सत्य है, प्रेम सहज है, प्रेम परमात्मा तत्त्व है, प्रेम अद्वैत है, प्रेम अशोक है, प्रेम निर्भय है, प्रेम अकषाय है, प्रेम सुख है, प्रेम संतोष है, प्रेम अमरत्व है, प्रेम जीवन है।

अपने अदृष्ट अप्राप्य प्रेमी के प्रति अपने भाव अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त होने पर स्वयं लेखक भी बस यही कह सका-

किनारा वो हमसे किए जा रहे हैं,
लहू.., बनके आँसू,
बहे जा रहे हैं।
इश्क में उनके
बे-ग़ैरत बने हैं,
दिल है उन्हीं पे
जिए जा रहे हैं।

अंततः राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों में-

प्रेम कभी दावा नहीं करता, वह तो हमेशा देता है। प्रेम हमेशा कष्ट सहता है।
न कभी झुंझलाता है, न बदला लेता है।[17]

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 2 – 2025

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. भक्तिसूत्र 51, सूक्तिसागर, रमाशंकर गुप्त, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ, संस्करण- तृतीय, 1983, पृ० - 409
2. Shakespears, वही, पृ० 414
3. मैंने आहुति बनकर देखा, इत्यलम्, अज्ञेय, www.kavitakosh.org
4. रामनरेश त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, मयूर पेपर बेक, संस्करण- 28, 2001, पृ०-501
5. कबीर, नीति के दोहे, kavitakosh.org
6. रामनरेश त्रिपाठा, हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, मयूर पेपर बेक, संस्करण- 28, 2001, पृ०-501
7. रविंद्रनाथ टैगोर, सूक्तिसागर, रमाशंकर गुप्त, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ, संस्करण- तृतीय, 1983, पृ० - 411
8. भगवतीचरण वर्मा, चित्रलेखा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं- बारहवां, 2008, -72 पृ०
9. महाकवि धनानंद डॉ० राज बुद्धिराजा, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2002, पृ०- 144
10. वही, पृ०-50
11. वही
12. कबीर दोहावली, कबीर, www.kavitakosh.org
13. तुलसीदास, रामचरितमानस, बालकाण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं० जनवरी 2014
14. प्राण-गीत, गोपालदास नीरज, सूक्तिसागर, रमाशंकर गुप्त, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ, संस्करण-तृतीय, 1983, पृ०- 411
15. गालिब, quotesdiary.com
16. ओशो, www.osho.com
17. महात्मा गांधी, सूक्तिसागर, रमाशंकर गुप्त, उ.प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ, संस्करण- तृतीय, 1983, पृ० - 414

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved